शोध मंथन Vol. XIV No.IV Oct.-Dec. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

महाराष्ट्र की कोरकू जनजाति में लोककथाए : एक मानवशास्त्रीय अध्ययन

प्राप्तिः 18.12.2023
स्वीकृतः 25.12.2023

100

विवेक कुमार
शोधार्थी, मानवविज्ञान एवं जनजाति अध्ययन विभाग
झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, राँची
ईमेलः *vivekanthro18@gmail.com*

महेंद्र कुमार जायसवाल
शोधार्थी, मानवविज्ञान विभाग
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
वर्धा (महाराष्ट्र)
ईमेलैः *mahendrajaiswal712@gmail.com*

सारांश

किसी भी समाज में लोककथाओं का अपना एक विशेष स्थान होता है। लोककथाएँ उस समाज की इतिहास का मौखिक वर्णन करती है। इसके अलावा समाज में मौजूद संस्थाओं की उत्पत्ति कैसे हुई, इसका भी पता लोक कथाओं, लोक गीतों या लोक विद्या के अन्य माध्यमों के द्वारा आसानी से पता चलता है। इस प्रकार लोककथा समाज की संस्कृति का दर्पण होती है। जिसमें उस समाज की सभी छोटी–बड़ी गतिविधियों का वर्णन होता है। इसके अतिरिक्त समाज की रूपरेखा कैसी होनी चाहिए या फिर यह लोक समुदाय अपने लिए कैसा समाज चाहता है? उन सब का वर्णन लोकविद्याओं के माध्यम से भी की जाती है जिसमें लोककथाएँ एक महत्त्वपूर्ण तरीका है। कोरकू जनजाति की लोककथाओं से उस समाज की आंतरिक मंशा का पता चलता है। विशेष कर समाज कैसा होना चाहिए, इसके व्यक्तिगत एवं सामाजिक व्यवहार कैसा होना चाहिए, इसका वर्णन उनकी लोककथाओं में मिलता है। कुल मिलाकर एक आदर्श जीवनशैली के इर्द–गिर्द ही कोरकू की लोककथाएँ होती है। इन सब गतिविधियों का वर्णन कोरकू की लोकगीतों एवं लोककथाओं में मिलता है। लोककथाओं के माध्यम से वे अपने पर्व–त्योहारों से जुड़े मौखिक इतिहासों को सहेजने का कार्य करते हैं। भावी पीढ़ी इन लोककथाओं को सुनकर खुद भी उस क्रियाविधि में शामिल होने की प्रतीक्षा करते हैं। इन पर्व–त्योहारों में किसी समय हुए घटनाओं का जिक्र साल दर साल होते ही रहता है। जो धीरे–धीरे अपनी जगह बना लेती है और लोककथा के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

मुख्य बिन्दु

मेलघाट क्षेत्र, सामाजिक स्थिति, धार्मिक उत्पत्ति, लोककथा, मौखिक इतिहास परंपरा, पर्व–त्यौहार।

मूल आलेख

कोरकू जनजाति का विस्तार महाराष्ट्र से होते हुए मध्य–प्रदेश के खंडवा, बैतुल, हौशंगाबाद, निमाड़, छिंदवाड़ा आदि जिलों में भी है। महाराष्ट्र की तुलना में मध्य–प्रदेश के कोरकू बोली में अंतर

देखने को मिलती है। महाराष्ट्र के अमरावती जिले में कोरकू धारणी तहसील एवं चिकलधरा तहसील में रहते हैं जो मेलघाट टाईगर रिजर्व के अंतर्गत आता है। यह वनांछादित क्षेत्र है। जिस कारण इन इलाकों में कई बार बाघों ने कोरकू समाज के लोगों पर हमला किया है। उनके घरों में बंधे बकरी, गाय–भैंस के बच्चे एवं कुत्ते आदि को वे घात लगाकर उठा ले जाते हैं। जिससे इस इलाके में बाघों के प्रति बहुत ही अधिक दहशत का माहौल बना रहता है। वर्तमान की अपेक्षा पहले की स्थिति तो और भी भयावह थी तब उनका सामना कई बार इन जंगली जानवरो से भी हुआ है। इन जंगली जानवरों के हमलों में कई कोरकू की जान चली गई है। इन सारी प्रकरणों को कोरकू यथावत् अपने समाज के लोगों को बतलाते थे। जिनमें उनकी शौर्यगाथा से लेकर जंगली जानवरों से जुड़े डर व आतंक का भी समावेश रहता था। भुक्त भोगियों के द्वारा बताई गई बातें अधिक विश्वसनीय होती थी जिसपर लोग आसानी से यकीन करते थे। हालांकि उनके दावों में कितनी सच्चाई थी इसपर कुछ भी कहा नहीं जा सकता है। अकसर ऐसी घटनाओं का जिक्र करने वाले लोगों का समाज में एकाएक मांग बढ़ जाती है। जब लोग आपस में मिलते है तो उनसे उस घटना को जरूर सुनना पसंद करते हैं जिनमें उनका सामना फलां जानवर से हुआ था। ऐसे ही धीरे–धीरे वह व्यक्ति एक कथाकार बन जाता है। उसकी मृत्यु के पश्चात भी समयानुसार थोड़ी बहुत हेर–फेर या बढ़ा–चढ़ा कर उनकी कहानियों को निरंतर आगे बढ़ाया जाता है। जो वर्तमान में एक लोककथा का स्वरूप ले चुकी होती है। कोरकू में मौजूद लोककथाएँ एक समान नहीं है। यह स्थान एवं व्यक्ति विशेष के साथ बदलती है। लोककथाएँ एक समाज का वह ज्ञान स्तंभ है, जिसे लोग पीढ़ी दर पीढ़ी सहेजते हुए आगे बढ़ते हैं एवं अपने भावी पीढ़ी तक मौखिक या लिखित रूप से पहुँचते हैं। चूंकि सरल समाजों में लिखित माध्यमों की तुलना में मौखिक माध्यम ही सर्वप्रचलित होते हैं। कोरकू लोककथाओं को सुनने के बाद मुख्य रूप से दो स्थिति उभर कर सामने आती है जैसे कि सामाजिक स्थिति एवं धार्मिक स्थिति।

सामाजिक स्थिति

लोककथाओं का समाज में विशेष स्थान होता है। समाज अपने बनाए हुए नियम–कानून, रीति–रिवाज एवं परंपरा को लोककथाओं के माध्यम से भी संचालित करने का काम करती है। लोककथाएँ समाज के तात्कालिक जरूरतों एवं नीतियों तथा उद्देश्यों के अनुसार बदलती रहती है या उसमें थोड़ी बहुत संशोधन होते रहते हैं। कोरकू लोककथाओं में सामाजिक व्यवहार से लेकर व्यक्तिगत व्यवहार एवं आचरण पर विशेष बल दिया जाता है। जैसे चोरी न करना, छल–कपट न करना, पैसे जमा न करना, लालच न करना इत्यादि जैसे अवगुणों का उनकी कहानियों में विशेष स्थान होता है। इन बुरे आचरणों के माध्यम से समाज में यह बताने का प्रयास किया जाता है कि ये सभी तत्त्व व्यक्ति एवं समाज के लिए अच्छे नहीं है। इन्हें त्यागना ही उचित होता है। ऐसी लोककथाओं का मूल उद्देश्य ही सामाजिक सुधार होता है। कोरकू एक कृषक जनजाति है। उनकी लोककथाओं में बैल व अन्य घरेलू पशुओं का जिक्र जरूर होता है। जब भी कोई लोककथा का निर्माण हुआ होगा तो उसे एक खास परिस्थिति के अनुसार निर्मित किया गया होगा जो उस समाज के ढाँचे को भी चरितार्थ करता हो। चूंकि, किसान के जीवन में बैल, गाय, भैंस, बकरी, सूअर एवं कुत्ते का बड़ा ही विशेष स्थान होता है इसलिए इनकी कहानियों व गीतों में भी इन घरेलू जानवरों का उल्लेख मिलता है।

धार्मिक स्थिति

लोककथाओं के अध्ययन से पता चलता है कि कोरकू की उत्पत्ति, उनका ज्ञान और धार्मिक मान्यताएँ कैसी है? कोरकू अपनी सामाजिक गतिविधियों का संचालन सदियों से प्रकृति के साथ करती चली आ रही है। प्रकृति न सिर्फ उनकी जीविकोपार्जन का मूल साधन रही है बल्कि उनकी सांस्कृतिक विकास भी प्रकृति के सहारे ही हुई है। इसलिए प्रकृति या अन्य तरह के मिथक इनको सकारात्मक रूप से ऊर्जावान बनाते हैं जिससे उनका विश्वास और भी प्रबल हो जाता है। वे आज भी इसी के अनुरूप अपना सामाजिक–सांस्कृतिक एवं धार्मिक व्यवहार प्रस्तुत करते हैं। भगवान महादेव कोरकू के सबसे बड़े देवता हैं। इसके अतिरिक्त रावण को कोरकू अपना इष्ट देवता मानते हैं क्योंकि इनकी उत्पत्ति रावण के द्वारा ही हुई थी। किंतु, विडम्बना यह है कि इस क्षेत्र में रावण की एक भी पूजा स्थल नहीं है। रावण संबंधी धार्मिक भावनाएं केवल आदर–सम्मान तक ही सीमित है। धार्मिक रूप से रावण की पूजा अभी कोरकू के व्यावहारिक जीवन में नहीं है। हालांकि, मुठवा से जुड़े पत्थरों के समूह में रावण का भी एक पत्थर होने की बात कही जाती है। लेकिन, पूर्ण रूप से या स्वतंत्र रूप से रावण की न तो कहीं प्रतिमा है और न ही कहीं कोई पूजा स्थल है। इसके बावजूद भी कोरकू लोग रावण से जुड़े मिथक एवं लोककथाओं का बड़े सम्मानजनक तरीके से अपने समाज में स्थान देते हैं। इसके अतिरिक्त कोरकू की उत्पत्ति जिन–जिन गोत्रों से हुई है वे उनका भी सम्मान करते हैं। महिलाएं प्रायः गोत्र संबंधी चिन्हों को 'गोदना' के माध्यम से अपने हाथों या शरीर के अन्य भागों पर लगाती हैं। अपने गोत्र से जुड़े प्राकृतिक तत्वों संबंधी सारे नियमों एवं निशेधों का पालन कोरकू बहुत ईमानदारी से करते हैं। लोककथाओं के माध्यम से वे अपने पर्व–त्योहारों से जुड़े मौखिक इतिहासों को सहेजने का कार्य करते हैं। भावी पीढ़ी इन लोककथाओं को सुनकर खुद भी उस क्रियाविधि में शामिल होने की प्रतीक्षा करते हैं। इन पर्व त्योहारों में किसी समय हुए घटनाओं का जिक्र साल दर साल होते ही रहता है। जो धीरे–धीरे अपनी जगह बना लेती है और लोककथा के रूप में परिवर्तित हो जाती है। कोरकू जनजाति की लोककथाएँ जो मौखिक रूप में उपलब्ध है उसे शोधार्थी ने संग्रहीत करके यहाँ लिखित रूप में लिपिबद्ध किया है। जैसे–

बैल के दाँत

इस कोरकू लोककथा में राजा को यह सुझाव दिया जाता है कि उन्हें अपने से छोटे अथवा गरीब के घर में भोजन करना चाहिए। ऐसा करने से उन्हें भगवान की कृपा होगी एवं उन्हें पुत्र की प्राप्ति भी होगी। राजा इस सुझाव को मानते हुए अपने नौकर के घर में भोजन करते हैं। इसमें दो बातें सामने आती है जिसे आज भी कोरकू समाज में देखी जा सकती है। पहला, राजा द्वारा अपने नौकर के घर पर भोजन करना कोरकू संस्कृति के 'भोजन संबंधी सांस्कृतिक' पक्ष का वर्णन करता है। कोई भी व्यक्ति कोरकू के घर में जाता है तो वे लोग उसे भोजन करने को जरूर पूछते हैं। ऐसा मानना है कि भोजन कराने से देवी–देवताओं की कृपा होगी और हमारी मनोकामनाएँ भी जल्द ही पूरी हो जाएगी। दूसरा, राजा को अपना उत्तराधिकारी चाहिए था। जिसके लिए उसे 'पुत्र' की चाहत थी। ऐसा इसलिए है क्योंकि कोरकू पितष्सत्तात्मक समाज है यहाँ आज भी पुत्र का स्थान बड़ा होता है। पिता की संपत्ति पर 'पुत्री' का कोई अधिकार नहीं होता है। इसलिए इस लोककथा में भी भगवान से पुत्र की ही कामना की गई है। इसके अतिरिक्त इस लोककथा में राजा को भेंट स्वरूप 'बैल' देना कृषि प्रधान कोरकू जनजाति के व्यवहार को प्रदर्शित करता है। आज भी कोरकू समाज में बैल का

महत्त्व बहुत अधिक है। राजा जैसे व्यक्ति के लिए कोई भी व्यक्ति अपने तरफ से कीमती भेंट ही देने की कोशिश करेगा। इस लोककथा में राजा को बैल भेंट में दी जाती है अर्थात कोरकू समाज में बैल बहुत कीमती हैं। आज भी कृषि संबंधी सारे मुख्य कार्य बैलों के माध्यम से ही की जाती है। पहाड़ी स्थल होने के कारण ट्रैक्टर प्रत्येक स्थान तक नहीं पहुँच पाते हैं किंतु बैलों को कहीं भी ले जाया जा सकता है। आज भी प्रत्येक कोरकू के घरों में कम से कम एक जोड़ी बैल मिल ही जाएँगे। जिसे वे अपने घर के सामने में ही खूँटे से बांधते हैं। वे लोग बैलों को मारते भी नहीं है। जैसा इस लोककथा में प्रस्तुत किया गया है कि बैल को मारने पर उसका ऊपर का दाँत टूट जाता है जिसकी वजह से आज तक बैल के ऊपर के दाँत नहीं आए हैं। इसलिए वे क्रोध में बैल पर हाथ नहीं उठाते है।

पैसों का झाड़

यह कोरकू लोककथा व्यक्ति के अंदर सामूहिकता की भावना पर बल देती है। लगभग एक स्थान विशेष में सारे लोग कृषि कार्य एक साथ शुरू करते हैं। कृषि की शुरुआत से लेकर अंत तक सभी लोग एक साथ खेतों की जुताई, रोपाई एवं कटाई करते हैं। इसमें पाँच–दस दिन आगे पीछे होना बहुत बड़ी बात नहीं होती है। ऐसा बिल्कुल ही नहीं होता की पूरा समाज कुछ भी न रोप रहा हो और कोई व्यक्ति अकेला ही अनाज की रोपाई कर रहा हो। प्रायः न के बराबर ही ऐसा देखने को मिलेगा। इस लोककथा में राजा स्वयं के खेतों में पैसों को रोप देता है। जिसका परिणाम यह होता है कि अंत तक आते–आते उसका पहले का सारा पैसा खत्म होने लगता है और वह एक दम कंगाल हो जाता है। लोककथाओं में ऐसी घटनाएँ समाज पर बेहद गहरा प्रभाव डालती हैं। इससे लोग एक साथ सामुदायिक स्तर पर कार्य करने के लिए अग्रसर होते हैं। न सिर्फ कृषि कार्य के लिए यहाँ तक की हर कार्य में कोरकू अपने समाज के अन्य लोगों के साथ मिलकर ही कार्य करते हैं। अकेले कार्य करना लालच का परिचायक है जैसा राजा करता है। राजा अकेले ही पैसे की खेती करता है ताकि उसका लाभ भी अकेले उठा सके। कोरकू में लालच का कोई स्थान नहीं है। लालच का परिणाम हमेशा नुकसान देहक ही होता है जैसा कि राजा के साथ हुआ। दूसरी अन्य बात यह है कि ग्राम जीवन में सामूहिकता पर विशेष बल दिया जाता है। अगर कोई लाभ हो तो सामूहिक हो और हानि हो तो भी सामूहिक हो ताकि जो भी क्षति हुई है उसका भार किसी एक व्यक्ति पर न पड़े और सभी मिलकर उससे उबर सके। इस लोककथा से कोरकू समाज की एक बेहद महत्त्वपूर्ण संस्कृति का पता चलता है। कोरकू 'स्वप्नदर्शी' जनजाति है। उनका ग्राम निर्माण भी स्वप्न के आधार पर होता है। इस लोककथा में भी राजा को स्वप्न आता और वह उसी के अनुरूप आगे की प्रक्रिया को करता है। आज भी कोरकू रोजाना सुबह उठकर रात में देखे हुए सपने के बारे में बातचीत करते हैं। जैसे– अगर किसी के सपने में देवता या देवी क्रोधित हैं तो ये लोग सुबह उस पर चर्चा करेंगे और इस परिणाम पर पहुंचेंगे कि शायद देवी–देवता क्रोधित होंगे। इसलिए इसके समाधान के लिए वे भुमका से भी पूछ सकते हैं या फिर स्वयं एक पूजा या धार्मिक अनुश्ठान का आयोजन कर सकते हैं। स्वप्न कोरकू के जीवन का एक अभिन्न अंग है। वे अपने पूर्वजों को भी अपने सपने में देखते है। अगर पूर्वज उनके सपनों में अच्छी बातों को बताते हैं तो वे उसे शुभ संकेत मानते हैं, अगर बुरी बातों को बताते हैं तो वे इस पर गहन विचार भी करते हैं एवं उसके समाधान के लिए जो बन पड़ता है वो करते हैं।

मेहनत की कमाई

कोरकू लोककथाओं में राजा–रानी से जुड़ी लोककथाएँ बेहद आम है। सुसर्दा नामक स्थान पर आज भी उस क्षेत्र के राजा का एक किला है। इनकी संस्कृति में राजा एवं उनके राज–पाट व कार्यशैली से जुड़ी बातों का स्थान उनकी लोककथाओं में बड़ी आसानी से मिल जाता है। इस लोककथा में एक जगह राजा अपने पूर्वजों की दी हुई सोने–चाँदी के जवाहरात व सिक्के दान में देने के लिए लेकर आते हैं। वर्तमान में कोरकू के पास पहले जैसा आभूषण नहीं है। उनके पूर्वजों के पास चाँदी के बहुत सारे आभूषण हुआ करते थे जिसकी संख्या आज बेहद कम हो चुकी है। इस लोककथा में यह भी संदेश देने का प्रयास किया गया है कि कोई भी कार्य बड़ा या छोटा नहीं होता है। हमें अपने मेहनत पर विश्वास रखना चाहिए। यही सोच आज भी कोरकू में देखी जा सकती है। जनजातीय समाज मेहनती होते हैं उनकी जीवन यापन ही प्रकृति के साथ आरंभ होती है एवं प्रकृति के बीच खत्म होती है। इसके अतिरिक्त इस लोककथा में भगवान महादेव का योगी के वेश में आना व उन्हें जीवन का अनमोल शिक्षा देना कोरकू समाज में 'अतिथि देवो भवः' वाक्य को चरितार्थ करता है। कोरकू लोककथाओं में अतिथि सत्कार का वर्णन किसी न किसी रूप में आ ही जाता है। अतिथि उनकी लोककथाओं के अंदर एक विशेष पात्र के रूप में मौजूद होते हैं जिनका निरादर वे नहीं करते हैं। कोरकू लोगों का मानना है कि घर में अतिथि के रूप में स्वयं भगवान महादेव भी आ सकते है। इसलिए वे अतिथियों का बेहद सम्मान करते हैं एवं आसानी से अपने समाज में शामिल भी कर लेते है। बाहर से आए हुए व्यक्ति को ऐसा कतई भी यह एहसास नहीं हो पता है कि वो उस समाज का नहीं है।

दान का महत्त्व

इस लोककथा में भी अतिथि सत्कार से संबंधी संदेश देने की कोशिश की गई है। इस लोककथा में 'भील' जनजाति का उल्लेख मिलता है जो वन में रहते हैं। कोरकू भील जनजाति को पसंद नहीं करते हैं। इसके बावजूद भील जनजाति की अतिथि सत्कार का उल्लेख मिलता है कि कैसे सीमित भोजन में भी जनजातीय समाज अन्य समाज के लिए भोजन कराने को तैयार रहते हैं। इसके अलावा कोरकू का भील को नापसंद करने के पीछे की वजह यह भी है कि काफी समय पहले भील जनजाति के लोगों ने कोरकू से लूटपाट की थी एवं उनके चाँदी के आभूषणों को उनसे छीन लिया था। ऐसा वे बार–बार करते थे। इस लोककथा में भी भील को जंगल में दिखाया गया है जो भयंकर जंगली जानवरों के बीच में रहते हैं। ऐसी परिकल्पना कोरकू शायद भील के विशेष संदर्भ में ही किए होंगे जिसमें उनका जीवन डर के साये में बीते। जहाँ उन्हें पल–पल बाघों का खतरा हो। इस लोककथा में बाघ के द्वारा भिलानी को खाया जाना इस बात को साबित करता है कि कोरकू अपनी कथाओं में भी भील को सुखी नहीं देख सकते। इसके अतिरिक्त ये लोककथा पुनर्जन्म पर भी प्रकाश डालती है। कोरकू पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं। उनका मानना है कि अगर किसी व्यक्ति के साथ उसके पूर्व जन्म में अन्याय होता है तो उसे इस जन्म में न्याय जरूर मिलेगा। इसके अतिरिक्त इस जन्म में किए गए पाप की कीमत व्यक्ति को अगले जन्म में चुकाने होंगे। ऐसी विचारधारा कोरकू समाज में आज भी विद्यमान है।

जादू की कड़ी

इस लोककथा में भगवान महादेव एवं माता पार्वती के बीच के प्रेम संबंध व निष्ठा को बताया गया है। जिस प्रकार इस लोककथा में माता पार्वती के द्वारा भगवान महादेव को ढूंढ कर लाया जाता

है। जिस प्रकार वे अपना गृहस्थ जीवन बर्बाद होने से बचा लेती हैं, ठीक उसी प्रकार कोरकू महिलाएं भी अपने पति के प्रति निष्ठा एवं संपूर्ण समर्पण का भाव रखती है और उनसे ऐसे ही व्यवहारों की उम्मीद भी होती है। पहले कोरकू पुरुष बहुपत्नी विवाह किया करते थे लेकिन आपसी कलह एवं शिक्षा के कारण वे अब एक विवाह पद्धति का ही पालन करते हैं। ऐसी लोककथाएँ कोरकू महिलाओं के बीच में काफी कही व सुनी जाती है। ऐसी लोककथाएँ समाज में स्त्री एक आदर्श पत्नी व बहु साबित हो, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निर्मित की जाती है। इसमें देवी–देवताओं को जोड़ देने से इसकी गुणवत्ता में और भी मजबूती आ जाती है।

उपसंहार

कोरकू जनजाति की लोककथाएँ उनके व्यावहारिक एवं सामाजिक पक्षों का वर्णन करती है। जिनमें उनकी उत्पत्ति एवं सृजन से संबंधित जो लोककथाएँ हैं वो आज भी समाज में एक जैसी है। इनका स्वरूप आज भी वैसे का वैसा ही है। इनकी लोककथाओं में भगवान शिव, रावण, मेघनाथ आज भी सुनने में मिल जाते हैं। इसके अलावा इनके इष्ट देवता मुठवा से जुड़ी लोककथाओं का भी उल्लेख मिलता है। इनकी लोककथाएँ एक सामाजिक सीख की ओर इशारा करती है जो इनकी लोककथाओं में देखने को मिलता है। लोककथाओं में कोरकू पुरुशों का वर्णन एक मेहनती व हिम्मत न हारने वाला व्यक्ति के रूप में किया जाता है। वहीं महिलाओं का वर्णन कई प्रकार के परीक्षाओं को देने वाली व अपने आप को साबित करने वाली जैसे चरित्र के रूप में वर्णन किया जाता है। ये सभी वर्णन लोककथाओं के माध्यम से आज भी किए जाते हैं जिसमें आज की स्थिति एवं वर्तमान बदलते परिवेश के अनुसार परिवर्तन हो रहे हैं। लोककथाओं की तमाम निरंतरताओं के बावजूद उनमें कई सारे परिवर्तन होते हैं जो किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति या किसी विशेश तत्व के प्रभाव के कारण से होती है। वर्तमान में कोरकू कई सारे मानवीय कारकों से उत्पन्न परिवर्तनों का सामना कर रहे हैं। जिससे धीरे–धीरे उनकी लोककथाओं व इसकी निरंतरता में कमी आ रही है। इसके अतिरिक्त लोककथाओं की निरंतरता में समयानुसार परिवर्तन होते रहते है। मौखिक स्वरूप होने के कारण इसमें बाह्य तत्वों का समावेश बेहद आसानी से हो जाता है। समाज में एक समय लोककथाएँ बेहद प्रभावशाली माध्यम थी, लेकिन समयानुसार इसमें परिवर्तन होते गए एवं कई सारी चीजों का स्वरूप अब बदल गया है। कोरकू लोककथाओं की वर्तमान स्थिति को बेहतर ढंग से समझने के लिए उसकी निरंतरताओं एवं परिवर्तनों को जानना बेहद आवश्यक है।

संदर्भ

1. उपाध्याय, विजय शंकर., पाण्डेय, गया. (2001). *मानवशास्त्रीय विचारक एवं उनकी विचारधाराएँ.* दिल्ली विश्वविधालय हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय.
2. एल्विन, वेरियर. (1943). *दि एबोरिजिनल्स.* बंबई ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
3. चौरे, नारायण. (1987). *कोरकू का सांस्कृतिक इतिहास.* नागपुर विश्वभारती प्रकाशन.
4. चौरे, नारायण. (1989). *भारतीय जनजाति कोरकूओं के लोकगीत.* नागपुर विश्वभारती प्रकाशन.
5. पाटिल, अशोक. (1993). *कोरकू जनजीवन.* नागपुर विश्वभारती प्रकाशन.
6. पारे, धर्मेन्द्र. (2005). *कोरकू जनजातीय गाथा ढोला कुँवर.* भोपाल आदिवासी लोक कला अकादमी.

7. पारे, धर्मेन्द्र. (2013). *कोरकू जनजाति की कथाएँ.* भोपाल आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी.
8. पाण्डेय, गया. (2006). *भारतीय मानवशास्त्र.* नई दिल्ली कान्सैप्ट पब्लिशिंग कंपनी.
9. मुखर्जी, रवीद्र नाथ. (2010). *सामाजिक मानवशास्त्र की रूपरेखा.* दिल्ली विवेक प्रकाशन.
10. हसनैन, नदीम. (2010). *भारतीय जनजातीय संस्कृति.* नई दिल्ली कान्सैप्ट पब्लिशिंग कंपनी.